शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 02 अंक– 07 जुलाई - सितम्बर -2024 Impact factor– 03

हिंदी दिवस -पखवाड़ा -माह की बधाई

Dr.Renu Sinha.
HOD, Hindi, Nirmala College Ranchi, Jharkhand
Mobile number : 9430763472

हाँ आज हिंदी दिवस है ,पूरा सितंबर माह हिंदी माथे की बिंदी बनी इठलाती रहेगी ! क्यों न ?? कम से कम वर्ष में एक माह ---- ठीक से कहें तो एक दिन--- इस भारत में हर किसी को इठलाने का अधिकार है। हो भी क्यों न ?? दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र---- जिह्वा पर विराजती दुनिया का सबसे सुंदर, राष्ट्र रक्षक संविधान ! इसी संविधान ने हिंदी को 14 सितंबर 1949 को पूरे दम-खम के साथ राजभाषा के रूप में अंगीकार किया ,लेकिन हम पचहत्तर वर्ष बाद भी हिंदी दिवस – माह मना कर प्रसन्नचित्त है। क्यों न ? है तो भारत माता के ललाट की दीप्त बिंदी------ हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं ! हिंदी दिवस पर हिंदी को भावांजलि ----- साथ ही हिंदी दिवस - माह पर भावादृत होने वालों के प्रति -----

"हिंदी को लाख आभूषणों ,संज्ञाओं से हम क्यों न विभूषित कर दें --- सच्चाई यही है कि देश स्वतंत्र होने के पश्चात हिंदी दिन-रात पददलित होती आयी है ,हो रही है ,होती रहेगी ---।

" हम भारतीयों की विशेष रूप से हिंदी भाषियों की हिंदी के प्रति जो उपेक्षित भाव है ,ये हिंदी के विकास में सबसे बड़ी बाधा है।

शर्म की बात है कि हिंदी को अब तक राष्ट्र भाषा मन से नहीं माना गया है ,भले ही हम असंख्य बार शिक्षक की भूमिका में कक्षाओं में ,विविध मंचों से व्याख्यानों में ,आलेखों में ,किताब के पन्नों में लिख दें ,बोल दें। ## विविध स्थलों पर कार्यक्रम आयोजित करा के तालियाँ पिटवा लें ,लेकिन सच्चाई को हमें इस "हिंदी दिवस" पर कबूलना होगा कि भारतीयों की नासमझ ओछी ,राजनीति के झंडों तले बंटी हुई, प्रांतीय, जातीय, धर्मांधता की बौनी दीवारों के बीच हरपल कुचली जाती हुई "हिंदी" को हम दिवस-माह में बांधकर भारत माता की झूठी बिंदी बना कर अपनी आत्मा को निरर्थक तसल्ली न देते रहें। मात्र बिंदी ही नहीं, एक महान हिंदी सेवी नमन कर लेना

आज स्थिति ये है कि हिंदी को विकास-विस्तार के नाम पर लचीलापन अपनाने का एक सूत्र देकर ऐसा रौंदा गया है कि स्नातक-स्नातकोत्तर स्तर पर जिन उम्मीदवारों को किसी दूसरे विषय में दाखिला नहीं मिल पायेगा – हिंदी में दे दी जायेगी --- हालात ये कि उन्हें हिंदी का वर्ण ज्ञान , बिल्कुल सामान्य शब्दों का अर्थ ज्ञान नहीं होता ,उच्चारण तो दूर की बात। इस धारा के विद्यार्थी MA , Ph.D और न जाने क्या -क्या ??सबकुछ हो जा रहे हैं ----। # क्या यही हिंदी का विकास है ?? ## क्या यही हिंदी दिवस का उद्देश्य है ??? ### क्या अंग्रेजी की उल्टी-सीधी बौछार करने वाले हिंदी की खिल्ली उड़ाते हुए Indian कहलाते हुए गौरवान्वित होते रहें ????? #### आखिर कबतक भारतीय सर्वोच्च न्यायालय अपनी आधिकारिक भाषा अंग्रेजी मानती रहे ???? ##### कबतक भारत की राजभाषा हिंदी विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका से दुलत्ती खाती हुई अंग्रेजी पोषकों के हृदय को आनंदित करती रहे ??????---- प्रश्न अनेक हैं ,उत्तर कहीं मिलने वाला नहीं ---------- कौन सा ऐसा राष्ट्र है जिसका अपना वजूद global world में है – लेकिन उसकी अपनी राष्ट्र भाषा नहीं है ???? हिंदी नहीं रखना था – जो हमारे Freedom fighters (1857 to 1947)की भाषा थी North to South- East to West, All over India उस भाषा से इतनी नफरत ???? जानबूझकर इसे बढ़ने नहीं दिया गया। "भाषा जोड़ती है ,तोड़ती नहीं है"

हमारे सत्ताधीश जानसमझ कर Elite class and Backward Class बनाये रखने के लिए English को लादे रखे और उस Backward Class को Vote Bank बना कर use करते रहे।

हम सभी इस कुत्सित मनसा को समझ ही नहीं पाये। चीन, जापान,रूस ,जर्मनी , इटली,फ्रांस ,कोरिया ------ कोई भी हो – सभी अपनी राष्ट्र भाषा के माध्यम से सब काम करते हैं ,जबकि इन सभी country's में भी कई एक regional language है। खैर ,जो भी हो --- मेरी समझ में इस "हिंदी दिवस" को मना कर इसे तौहीन करना ही है ,न कि सम्मान देना -----????? रवींद्र नाथ टैगोर ने कहा था –" मेरी मातृ भाषा बांग्ला है ,लेकिन राष्ट्र भाषा हमारी हिंदी है ,मैं इसे ही राष्ट्र भाषा देखना चाहता हूँ।" विश्व भारती,शांतिनिकेतन में उनके समय से हिंदी को राष्ट्र भाषा मानकर इसके विकास-प्रसार के लिए ' हिंदी भाषा -साहित्य विभाग ' अनवरत काम कर रहा है। दक्षिण में भी ' दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' हिंदी के विकास में लगा हुआ है। Digital दुनिया में भी हिंदी पूर्ण सक्षम है ,यदि नहीं भी है तो उसके पीछे इच्छा शक्ति की कमी है। "हम गोरों के मानसिक गुलाम कल भी थे ,आज भी हैं ,कल भी रहेंगे।" हो भी क्यों नहीं ??? जब सिंहासन की भूख भारत को एक राष्ट्र मानने के लिए तैयार नहीं है ,तब फिर उसकी भाषा हिंदी क्योंकर हो ?? "फूट डालो ,शासन करो" चलता रहेगा । भाषा -संस्कृति -परंपराओं पर कुठाराघात होता रहेगा , तमाम दिवसों के मध्य 14 सितंबर-हिंदी दिवस हर वर्ष मनता रहेगा ,सरकारी प्रतिष्ठानों के दीवार पर पोस्टर-बैनर सितंबर माह तक लगा रहेगा ----- बेचारी हिंदी एक माह तक सुशोभित होती रहेगी ,अगले वर्ष के इंतजार में -------- लेकिन इस एक माह में ऐसे दो महान हिंदी सेवी इस वसुधा पर आये जिन्हें नमन करना परमावश्यक है – एक परम पूज्य संत अध्येता ,प्राध्यापक (संस्कृत-हिंदी दोनों के) और तुलसीदास – मानस - राम तथा हिंदी को अपने हृदय में बसाने वाले ' डॉ.फ़ादर कामिल बुल्के' । आपने जन्म तो लिया बेल्जियम में ,किंतु इसाई मिशनरी के रूप में भारत माता की गोद में आकर ,हिंदी भाषा तथा साहित्य की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया। "फ़ादर आपकी जन्म तिथि सितंबर माह की प्रथम तिथि 1st सितंबर 1909 है , हिंदी दिवस-माह पर हिंदी के प्रति आपके कथन को उल्लिखित न किया जाए कि – "संस्कृत महारानी है हिंदी बहुरानी है और अंग्रेजी नौकरानी" तो शायद हिंदी हमें माफ न करे।

दूसरे महान विभूति राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर हैं ।आपने अपनी लेखनी से अविरल हिंदी की ऊर्जस्वित स्रोतस्विनी बहाकर हिंदी जनमानस के चेतन मस्तिष्क में हिंदी को बसाया। आपका शुभ जन्म 23 सितंबर 1908 है। यह मात्र संयोग नहीं कि 01सितंबर फादर कामिल बुल्के का हिंदी सेवा के लिए अवतरण विदेशी जमीन पर (बेल्जियम का रैम्स चैपल) होकर हिंदी पर समर्पित हो जाता है और दूसरा 23 सितंबर को राजभाषा माह के समापन सप्ताह में माता गंगा की गोदे (जन्म स्थल : बिहार का सिमरिया ,मोकामा घाट ,बिल्कुल गंगा तट पर अवस्थित ग्राम) में अवतीर्ण होकर क्रांति का बिगुल बजा कर अपने ओजस्वी शब्दों के सामने स्वतंत्र भारत के प्रथम शक्तिमान सत्ताधीश को भी सोचने पर मजबूर किया। दिनकर जी के ओजस्वी शब्द बाण हिंदी की ही ध्वनियाँ थी ,जो हिंदी राजभाषा और साहित्य के लिए 'अमर' बेल है ।राष्ट्र कवि दिनकर और फादर कामिल बुल्के को कोटि-कोटि पुष्पांजलि के साथ राजभाषा हिंदी दिवस-पखवाड़ा-माह को भी कोटि-कोटि नमन ,कि हिंदी भारतीय Elite की भाषा बने न बने , High Court-Supreme Court की भाषा भी न बने ,भले ही मुकद्दमा लड़ने वाला बेचारा निरा ग्रामीण, अंग्रेजी से कोसों दूर हो किंतु इसी अभिलाषा के साथ कि हिंदी जो भारत माता के माथे की बिंदी है ,भारत की अस्मिता है ----- शीघ्र ही UN की आधिकारिक सातवीं भाषा के रूप में स्थान लेगी ,वैश्विक भाषा के रूप में अपना परचम लहरायेगी।।